1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों एवं भरतवंशियों को वैदिक नव वर्ष (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा) एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 48, अंक 23 | एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 31 मार्च, 2025 से रविवार 06 अप्रैल, 2025
विक्रमी सम्वत् 2082 | सृष्टि सम्वत् 1960853126
दयानन्दाब्द : 202 | पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये | दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

मुम्बई के बाद दिल्ली में आर्यसमाज के 150वें स्थापना वर्ष के आयोजनों भव्य शुभारम्भ

दिल्ली के समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थानों की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में

150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष का शुभारम्भ

रविवार 6 अप्रैल, 2025 : प्रातः 9:30 बजे से तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली

आप सब सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं

बन्धुओ ! 19वीं सदी के महामानव, आधुनिक भारत के निर्माता, युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज 150 वृक्ष के वटवृक्ष के रूप में अपनी सघन छाया से पूरी मानवजाति को अभिसिंचित कर रहा है। आर्य समाज द्वारा वैदिक धर्म, शिक्षा, संस्कृति, संस्कार, सेवा, साधना और समर्पण के ऐसे वृहद अखंड यज्ञों का अनवरत संचालन हो रहा है, जिनसे संपूर्ण मानवता संपोषित हो रही है। इस विशेष अवसर पर संपूर्ण विश्व की आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य उत्साह से भरपूर हैं और क्यों न हो उत्साहित। यह अवसर ही कुछ ऐसा है, जब हम अपनी 150 वर्षों की उपलब्धियों पर चिंतन करते हैं तो आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास में आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान, निर्भीक संन्यासी, त्यागी, तपस्वी आर्य नेता, वीरता धीरता के धनी महापुरुषों के योगदान, बलिदान, राष्ट्र उत्थान और मानव कल्याण तथा परोपकार की अद्भुत भावना, जिसके लिए उन्होंने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया, आर्य समाज के 150 वर्षों के इतिहास के हर अध्याय और पन्ने पर संसार के उपकार करने वाले महापुरुषों के स्वर्णिम हस्ताक्षर हैं, जोकि आज हमें आत्मचिंतन, आत्मनिरीक्षण और आत्म अवलोकन का संदेश दे रहे हैं।

आर्य समाज के 150 वें स्थापना वर्ष के आयोजनों का शुभारंभ मुंबई में 29-30 मार्च 2025 को हो गया है, वहां पर लगातार दो दिनों तक विशेष आयोजन समारोह पूर्वक संपन्न हुआ, जिसमें हजारों आर्य समाज के अधिकारी, आर्य संन्यासी, विद्वान, कार्यकर्ता, सदस्यों, आर्य नर-नारियों ने सहभाग किया, पूरा कार्यक्रम अपार सफलताओं के साथ संपन्न हुआ। इसके तुरंत बाद दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली राज्य के संयुक्त तत्वावधान में रविवार 6 अप्रैल 2025 को तालकटोरा इंडोर स्टेडियम नई दिल्ली में आर्य समाज के 150वें स्थापना वर्ष का भव्य आयोजन प्रातः 9 30 बजे से होना सुनिश्चित है।

अतः दिल्ली के समस्त वेद प्रचार मंडल, आर्य समाज, शिक्षण संस्थान, गुरुकुल,आर्यवीर दल, आर्य वीरांगना दल आदि के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्य सभी कार्यक्रम के अनुसार अवश्य पधारें, ऐसा निवेदन है।

- धर्मपाल आर्य
प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष समारोह : रविवार 6 अप्रैल, 2025 हेतु विशेष अनुरोध

- आर्य समाज के अधिकारी उस दिन प्रातः कालीन कार्यक्रम संक्षिप्त रखेंगे तथा नाश्ता आदि करवा कर कार्यक्रम में पधारें।
- पुरुष सफेद तथा हलके रंग का कुर्त्ता पायजामा पहनकर पधारें।
- महिलाएं लाल-पीले-संतरी रंग की साड़ी/सूट पहनकर पधारें।
- आर्यसमाजों के धर्माचार्य हलके रंग का धोती/कुर्त्ता तथा जैकेट पहन कर पधारें।
- आर्य समाजों के प्रधानों को पगड़ी बांधी जाएगी।
- आर्यवीर तथा आर्य वीरांगनाएं गणवेश पहनकर पधारें।
- यज्ञ समिति की महिलाएं लाल-पीले-संतरी रंग की साड़ी/सूट पहनकर पधारें।
- 8 से 10 वर्षीय बच्चे महापुरुषों के रूप में ड्रेस पहनकर पधारें।
- अध्यापिकाएं/प्रधानाचार्या अपनी निर्धारित विशेष साड़ी पहनकर पधारें।
- आर्य गुरुकुल/छात्रावास/अनाथालय के छात्र-छात्राएं अपने गणवेश में पधारें।

सीधा प्रसारण
आर्य सन्देश टी.वी. चैनल पर
www.aryasandeshtv/live

मुम्बई में 150वें आर्यसमाज स्थापना दिवस पर आर्य महासम्मेलन भव्यता के साथ सम्पन्न

सचित्र समाचार आगामी अंक में प्रकाशित किए जाएंगे - सम्पादक

निवेदक :- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य एवं समस्त आर्य संगठन

वक्फ बोर्ड संशोधन बिल संसद में पारित होने पर आर्यसमाज की ओर से भारत सरकार को बधाई

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ★ सभा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ★आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य

आर्य समाज 150
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
31 मार्च, 2025
से
06 अप्रैल, 2025

देववाणी-संस्कृत

विविध युद्धों में मुख्य रक्षक और सहायक परमेश्वर

वेद-स्वाध्याय

यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु यं जुनाः। स यन्ता शश्वतीरिषः।।
–ऋ० 1।27।7
ऋषिः–**आजीगर्तिः शुनःशेपः**।। देवता–**अग्निः**।। छन्दः–**गायत्री**।।

शब्दार्थ–अग्ने = हे अग्ने! **तू यं मर्त्यम्** = जिस मनुष्य की **पृत्सु अवाः** = युद्धों में रक्षा करता है और **यं वाजेषु जुनाः** = और जिसकी युद्धों में सहायता करता है **सः** = वह मनुष्य **शश्वतीः**= नित्य सनातन **इषः** = अन्नों को **यन्ता** = वश करता है – प्राप्त करता है।

विनय–इस संसार में मनुष्य को प्रत्येक अभीष्ट फल पाने के लिए लड़ाइयाँ लड़नी पड़ती है। संसार में नाना प्रकार के संघर्ष चल रहे हैं। हे प्रभो! जिस मनुष्य की तुम इन संग्रामों में रक्षा करते हो, अर्थात् जिस तुम्हारे अनन्य भक्त को सदा तुम्हारी सहायता मिलती रहती है, उस मनुष्य को नित्य अक्षय अन्न प्राप्त होते हैं। उसे रोटी के सवाल के लिए कोई लड़ाई नहीं लड़नी पड़ती। वह इससे निश्चिन्त हो जाता है, क्योंकि उसे एक नित्य अक्षय अन्न प्राप्त होते हैं। क्योंकि उसे एक नित्य अन्न मिल जाता है, जिससे वह सदा ही तृप्त बना रहता है। वह जानता है कि जिसे तूने यह शरीर दिया है और जो तू उसके इस शरीर की नाना प्रकार से रक्षा करता है, वही तू उसके इस शरीर को अन्न भी देता रहेगा। सब संसार के पशु-पक्षियों की चिन्ता करनेवाला तू उसके शरीर की भी स्वयं चिन्ता करेगा, नहीं तो शरीर को ही वापस ले-लेगा। वह जानता है कि अपने भक्तों के प्रति उसकी यह प्रतिज्ञा है ''**तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्**''। भक्तों के योगक्षेम करने की चिन्ता तूने अपने ऊपर ले-रखी है। बस, यही ज्ञान है कि जिसके कारण वे निश्चिन्त रहते हैं–तृप्त रहते हैं। यही ज्ञान ''नित्य अन्न'' है। यह रोटी का अन्न तो अनित्य है। आज खाते हैं, कल फिर भूख लग आती है। इससे नित्य तृप्ति प्राप्त नहीं होती; परन्तु उस आत्मज्ञान को प्राप्त करके वे सदा के लिए तृप्त हो जाते हैं। वे इसी आत्मज्ञान पर जीते हैं; रोटी पर नहीं जीते, अतएव रोटी न मिलने पर (शरीर छूटने पर) वे मरते भी नहीं; वे अमर हो चुके होते हैं। हम लोग रोटी पर ही जीते हैं और रोटी न मिलने पर मर जाते हैं। इस अनित्य अन्न (रोटी) के हमेशा मिलते रहने का प्रबन्ध करके यदि इसे नित्य बनाने का यत्न किया जाए तो भी यह नित्य नहीं बनता; नित्य तृप्तिकारक नहीं रहता, क्योंकि हमेशा अन्न मिलते रहने पर भी शरीर एक दिन बुढ्डा होकर छूट ही जाता है। रोटी उस समय उसकी तृप्ति व रक्षा नहीं कर सकती, अतः नित्य-अन्न तो ज्ञानतृप्ति ही है। हे परमेश्वर! इस युद्धमय संसार में तुम जिसके सहायक होते हो उसे यह शाश्वत् अन्न देकर–इस शाश्वत् 'इष्' का स्वामी बनाकर–उसे अमर भी कर देते हो।

–:साभार:–
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

150 वर्षों से मानवता को पोषित करता, आर्य समाज

19वीं शताब्दी के महामानव, आधुनिक भारत के निर्माता महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने सन 1875 में मानव कल्याण की जिस उदात्त भावना से मुंबई में आर्य समाज की स्थापना की थी, उसे शिरोधार्य करके आर्य समाज पिछले 150 वर्षों से निरन्तर संपूर्ण मानवजाति को मानवता का पाठ पढ़ाता आ रहा है। आर्य समाज वह आंदोलनकारी संगठन है जो केवल किन्हीं भी ज्वलंत मुद्दों को भड़काने का कार्य नहीं करता बल्कि मानवता की व्यावहारिक योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए सदैव प्रयासरत रहता है। आर्य समाज के नियम, सिद्धांत, मान्यता और परंपराओं को ध्यान से देखने से सहज ही ज्ञात होता है कि ये समस्त बिंदु मानवता के आधार स्तंभ हैं। जिनमें मानव की सर्वांगीण उन्नति की जो परिकल्पना की गई है, वह कहीं भी अन्यत्र देखने को अथवा सुनने को नहीं मिलती। आर्य समाज के नियम 6 में मानवमात्र को शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति का जो मूल मंत्र दिया गया है, उस पर विचार करने से पता चलता है कि ज्यादातर स्थानों पर शारीरिक उन्नति के बाद सामाजिक उन्नति की बात की जाती है किंतु आत्मिक उन्नति के बिना सामाजिक उन्नति संभव ही नहीं होती, आर्य समाज के नियमों में जो क्रम है वह अपने आप में महत्वपूर्ण है। पहले मनुष्य अपनी शारीरिक उन्नति करे फिर आत्मिक उन्नति करे और उसके बाद ही सामाजिक उन्नति करना संभव है। आर्य समाज के नियम 9 के अनुसार प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

''आज कोई हिंदुत्व का प्रचारक है, तो कोई इस्लाम का, कोई ईसाइयत का प्रचारक है तो कोई बौद्ध धर्म का, कोई सिख धर्म का तो कोई जैन धर्म का, पर मनुष्यता का, मानवता का, मानव धर्म का प्रचारक आर्य समाज के अतिरिक्त कोई दिखाई नहीं देता। चारों तरफ एक ही आवाज सुनाई देती है, कि हजरत मोहम्मद साहब पर ईमान लाओ और मुसलमान बनो अथवा हजरत ईसा मसीह पर ईमान लाओ और ईसाई बनो, महात्मा बुद्ध पर विश्वास रखो और बौद्ध बनो, महावीर तीर्थंकर पर विश्वास रखो और जैन बनो, सिख बनो, देवी देवताओं पर विश्वास रखो और मोक्ष पाओ, कुंभ में स्नान करो और मोक्ष प्राप्त करो आदि-लेकिन परमपिता परमात्मा जो संसार के कण-कण में व्यापक है, जिसके चलाने से हवाएं गतिमान हैं, निर्झर झरते हैं, प्रवाह बहते हैं, जो फूलों में मुस्कुराता है, पक्षियों के मधुर कंठो में आवाज बनकर गूंजता है, जो चीटी से लेकर हाथी तक सबका जन्म दाता, पालक और संहारक है, जो प्राणीमात्र का कर्मफल प्रदाता है, सारे संसार को गति देता है लेकिन स्वयं गति में नहीं आता, उस परमात्मा के प्रति विश्वास रखने की कोई बात कोई नहीं करता, अगर कोई करता है तो वह केवल और केवल आर्य समाज है।''

आधुनिक परिवेश में जो आपाधापी मची हुई है, एक दूसरे को गिराकर आगे बढ़ने की होड़ मची हुई है, व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और दुनिया में जो विध्वंस की आंधी चल रही है, क्या उससे मानव समुदाय शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के पथ पर आगे बढ़ रहा है, क्या सब लोग एक दूसरे की उन्नति, प्रगति और सफलता को देखकर संतुष्ट हो रहे हैं? अगर इस तथ्य पर विचार किया जाए वर्तमान में माता पिता, गुरु शिष्य,भाई-भाई , बहन-बहन, पति-पत्नी, समस्त कार्य व्यापार, देश, धर्म और संस्कृति से जुड़े लोग परस्पर कैसी भावना रखकर जीवन यापन कर रहे हैं? अतः आज संपूर्ण मानव समुदाय को अगर सुख, शांति और कल्याण की राह पर चलना है तो आर्य समाज द्वारा वेद आधारित मानवता ही वह पथ है जो हमें हमारे जीवन के लक्ष्य और उद्देश्य तक पहुंचा सकता है। इसलिए तो महर्षि देव दयानंद सरस्वती जी ने आजीवन यही प्रयास किया की सब लोग वेद के बताए हुए पथ पर अर्थात मानवता के सुपथ पर आगे बढ़े, ऊंचा उठें।

मानवता मनुष्य की सुवास है, उसका सार सर्वस्व है। मानव धर्म का ही दूसरा नाम मानवता है। मानवता के रहस्य को जानने के लिए हमें मानव शब्द के निर्वचन पर विशेष ध्यान देना होगा, मानव, मानुष, मनुष्य तथा मनुज आदि शब्द पर्यायवाची हैं। जो "मनु" "ज्ञाने" या "मनु अवबोधने" धातु से निष्पन होता है, इन सबका एक ही अर्थ निकलता है कि जिस व्यक्ति के कर्मों में ज्ञान अथवा विवेक समाविष्ट है, उसी में मानवता का उदय माना जा सकता है, इसीलिए निरुक्त के आचार्य यास्क का वचन है "मत्वा कर्माणि सिव्यति" अर्थात जो सोच-विचार कर, उचित-अनुचित को देखकर कार्य करता है, वही मनुष्य है। वैसे मानवता पशुता का प्रतिवाद है, जहां पशुता मिट जाती है समझ लो की वहीं से मानवता का उदय होना शुरू हो जाता है, यदि गंभीरता पूर्वक देखा जाए तो मानवता का अर्थ वासना पर विवेक की विजय है, विवेक पर वासना की विजय को तो पशुता ही कहा जाएगा, सद्गुण, सद्भावना, सद-आचरण और सद-व्यवहार से युक्त पुरुषत्व का नाम ही मानवता है। मानवता में वह सब शुभ सामर्थ्य केंद्रित है जो मनुष्य को पशुत्व या राक्षस वृत्ति से ऊंचा उठाते हैं और इस प्रवृत्ति को सदाचार, संयम परमार्थ सिद्धि-बुद्धि विवेक सहिष्णुता की ओर रखते हैं इस सारी विवेचना से यही परिणाम निकलता है कि मानवता का सही अर्थ मानव धर्म है और आर्य समाज इसी मानवता को आगे बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

यहां पर विचारणीय बिंदु यह भी है की आर्य समाज के अतिरिक्त संसार में ऐसा कोई भी मत, पंथ, संप्रदाय दृष्टिगत नहीं होता है जो मानव को मानव बनने की बात कहता हो, मानवता को अपनाने, उसे गति देने के लिए प्रचार-प्रसार का प्रयत्न भी करता हो। आज कोई हिंदुत्व का प्रचारक है, तो कोई इस्लाम का, कोई ईसाइयत का प्रचारक है तो कोई बौद्ध धर्म का, कोई सिख धर्म का तो कोई जैन धर्म का, पर मनुष्यता का, मानवता का, मानव धर्म का प्रचारक आर्य समाज के अतिरिक्त कोई दिखाई नहीं देता। चारों तरफ एक ही आवाज सुनाई देती है, कि हजरत मोहम्मद साहब पर ईमान लाओ और मुसलमान बनो अथवा हजरत ईसा मसीह पर ईमान लाओ और ईसांई बनो, महात्मा बुद्ध पर विश्वास रखो और बौद्ध बनो, महावीर तीर्थंकर पर

– शेष पृष्ठ 7 पर

150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष पर विशेष

आर्य समाज काकड़वाड़ी बम्बई का मन्दिर आर्यों का तीर्थस्थान है और रहेगा

– आनंदप्रिय पंडित
(प्रधान, गुजरात प्रा.आ.प्र. सभा बड़ौदा)

महर्षि दयानन्द जी ने सर्व प्रथम आर्य समाज की स्थापना दिनांक 7 अप्रैल 1875 को इसी आशा से कि बम्बई से उनका कार्य व्यापक रूप ले सकेगा। आजकल भी राजनैतिक क्षेत्र में ऐसी मान्यता है कि कोई भी आन्दोलन यदि बम्बई से सफल हो क्या वह देश भर में व्यापक रूप ले लेगा। बम्बई में कार्य का आरंभ तो सुंदर हुआ परंतु व्यापक न हो पाया। कारण बम्बई में जिन लोगों ने इसे अपनाया था वे सुधारक अवश्य थे, परंतु उनका प्रभाव आम जनता पर न पड़ सका। कारण बम्बई का प्रभाव गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा सिंध पर था। पश्चिमी भारत की अंग्रेजी राजकाल में बम्बई राजधानी थी परंतु यह सब प्रांत सिन्ध को छोड़कर पुरातन वादी थे और अपने रूढ़िगत सिद्धांतों को कट्टरपन से पालते थे।

आर्य समाज स्थापना के शताब्दी दिवस पर गुजरात प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्कालीन प्रधान, आदरणीय पंडित आनंद प्रिय जी ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा स्थापित "आर्य समाज मंदिर, काकड़वाडी, मुम्बई आर्यों का तीर्थ है और रहेगा " अपने हृदय के भाव एक प्रेरक आलेख के रूप में प्रस्तुत किए थे, जो कि आज 50 वर्ष बाद भी प्रासंगिक है। आज जब आर्य समाज स्थापना का 150वां वर्ष पूरे देश और दुनिया में मनाया जा रहा है, तब इस ऐतिहासिक पर्व का मुंबई से ही शुभारंभ किया गया है, जहां सारे देश के आर्यजनों ने आर्य समाज मंदिर काकड़वाडी को तीर्थ रूप मानते हुए 150 वे स्थापना वर्ष के यज्ञ का आरम्भ वहीं के यज्ञकुंड की ज्योति से किया गया... – सम्पादक

आर्य समाज का सब से अधिक प्रभाव पंजाब पर पड़ा और उत्तर भारत में पड़ा और आज शताब्दी का जितना उमंग और उत्साह उत्तर भारत में है अन्य प्रांतो में नहीं। जब आर्य समाज ने व्यापक रूप ले लिया तब बम्बई के अंतर्गत गुजरात सिंन्ध कर्नाटक और महाराष्ट्र थे उस समय बम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यक्षेत्र इन सब विभागों में था। बम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के सबसे अधिक कार्य रूप पूछा जाये तो गुजरात में था और उसका मुख्य केन्द्र काकड़वाड़ी आर्य समाज मंदिर में था जिसकी स्थापना महर्षि जी के करकमलों से हुई थी।

काकड़वाड़ी आर्य समाज वर्षो तक वैदिक धर्म प्रचार का केन्द्र रहा और अब भी है। बम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का दफ्तर यहीं रहता। आर्य प्रतिनिधि सभा के संन्यासी एवं महोपदेशक का विश्राम स्थान भी यही स्थल था। और सभा के अधिकारी एवं आर्य समाज के पदाधिकारी प्राय: इसी समाज के नेता रहे।

उत्तर प्रदेश के उपदेशक एवं आर्य समाज के प्रमुख नेता व यात्री जब भी बम्बई आते उनका स्वागत एवं सत्कार इसी आर्य समाज में होता। जिस समय गुजरात में डॉक्टर कल्याणदास जी का युग था उस समय आर्य समाज के प्रमुख कर्णधार पं. बालकृष्ण शर्मा, पं. द्विजेन्द्र नाथ, पं. मणिशंकर जी, श्री परघुभाई शर्मा आदि महानुभाव इसी समाज के साप्ताहिक सत्संगो में अमृत वर्षा करते थे उस समय सार्वदेशिक सभा के संगठन में भी इसी प्रदेश का प्रतिनिधित्व सभा के संगठन में भी इसी प्रदेश का प्रतिनिधित्व बम्बई काकड़वाड़ी समाज के कर्णधार ही करते थे। डॉ. कल्याणदास जी के नेतृत्व का

– शेष पृष्ठ 7 पर

परिवर्तन : आता नहीं है – लाया जाता है।

सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक के भारतवर्ष का वैभव काल

जब भारत कहाता था – "सोने की चिड़िया"

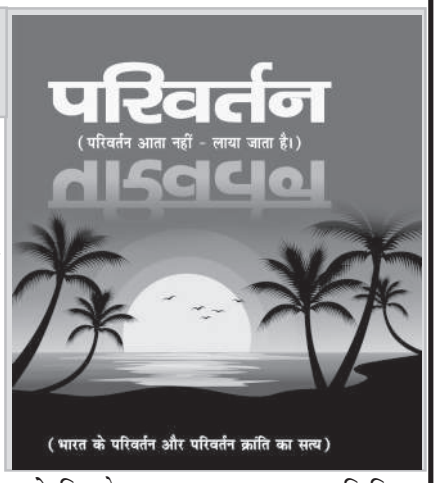

गतांक से आगे –

यदि रकम का अनुमान आज की मुद्रा में लगाएं तो लगभग 20 अरब से 30 अरब रुपये वार्षिक। कितने वर्ष राज रहा, लगभग 150 वर्ष। यदि सौ वर्ष भी पैसा भेजा गया तो 30,00,00,00,000×100= 30,00,00,00,00,000 ये बात केवल मुगलों की लिखीं, ये तो एक ही तरीके से भेजे गए धन का ही वृतान्त है जो ज्ञात है।

जब अंग्रेज भारत में आए तब मुगलों का शासन था। अब बारी थी अंग्रेजों की, तो उसके लिए हमारे पास अनुमान है। उलख पटनायक (प्रसिद्ध अर्थशास्त्री) ने इस विषय में विस्तृत निबन्ध लिखा है। जिसमें विस्तृत व्याख्या के पश्चात् निष्कर्ष के रूप में उन्होंने बताया कि 200 वर्षों की अल्पावधि में उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार लगभग 3000 लाख करोड़ रुपये (45 ट्रिलियन डॉलर) को अंग्रेजों ने अलग-अलग तरीकों से लूटकर इंग्लैंड भेजा, जोकि ब्रिटेन की वर्तमान अर्थ व्यवस्था से 17 गुणा बड़ी राशि है। व्यक्तिगत रूप से कितना लूटा होगा, अनुमान नहीं। राजे-रजवाड़े अपना कितना रुपये बाहर भेज चुके, इसका अनुमान मुश्किल है।

दुनिया में सबसे महंगे लाखों-करोड़ों हीरे उगलने वाली गोलकुण्डा खान के केवल एक हीरे की कीमत को सोचकर देखिए—8000 करोड़ रुपये, जिसका नाम है कोहिनूर हीरा, जो अंग्रेजों की लूट में भारत से लन्दन पहुंच गया, ऐसे कितने छोटे-बड़े अनगिन हीरे होंगे, क्या आप अनुमान लगा सकते हैं?

यानि जिस देश को अनवरत लगभग 1000 वर्षों तक लूटा जाता रहा, एक-दो लूट नहीं, एक-दो साल नहीं, 1000 वर्ष यानि दस शताब्दियां? सोचो कभी। उसके बावजूद आज भी भारत के मन्दिरों में कितनी अपार धन-सम्पत्ति मौजूद है। अभी घरों की तो बात नहीं कर रहे। केवल केरल के एक पद्मनाभ मन्दिर की ही बात करें तो उसके कुल 6 तहखानों से 132000 करोड़ के मूल्य की सम्पत्ति मिल चुकी है। एक बन्द तहखाने में अनुमानत: एक लाख करोड़ मूल्य की सम्पत्ति है। इस मन्दिर की कुल सम्पत्ति 1 ट्रिलियन डॉलर के मुकाबले की है। यह तो आज भी है। आप विचार करें कि लूट आरम्भ होने से पहले के भारत की सम्पत्ति और वैभव कितना होगा?

और यही वो कारण थे जिसके कारण भारत (आर्यावर्त) को कहा जाता था—
"सोने की चिड़िया।"

सबसे पहले ईसाई मिशनरी और मुस्लिम केरल में ही आए। सम्भव है कि अपार सम्पत्ति की खनक उनको यहां लाई हो और यहीं से शुरू हुआ हो लूट-खसोट-धर्मान्तरण का अनवरत सिलसिला।

भारत के हजारों मन्दिरों को तोड़े जाने का कारण केवल धार्मिक नहीं था कि वे मूर्तिभंजक थे। अगर ऐसा ही होता तो वह काम तो केवल मूर्ति तोड़ने से भी हो जाता। वास्तविक कारण ये था कि आक्रान्ता इस बात को जान चुके थे कि राजा और प्रजा की सम्पत्तियों का बैंक "भारत के मन्दिर ही हैं" और इन्हीं कारणों से इन्हें तोड़ा गया और कितनी सम्पत्ति लूटी गई, उसका मूल्य लगाना किसी भी इतिहासवेत्ता के बूते की बात नहीं, अनुमान ही लगाया जा सकता है।

दु:ख होता है ये सोचकर कि कितना सम्पन्न था हमारा प्यारा भारत, कितना वैभव था हमारे भारत में और कितना सुख था भारत में? दयानन्द बिना आधार नहीं बोले थे कि "उस समय दरिद्रों के यहां भी विमान थे।"

अब पाठकों को यह जानना जरूरी है कि जब वास्तव में हमारा भारत (आर्यावर्त) इतना अधिक ज्ञानवान, महान्, धनवान, वैभवशाली और विश्व को ज्ञान का प्रकाश बांटने के लिए विश्वगुरु के नाम से प्रसिद्ध था और सोने की चिड़िया कहलाता था तो ऐसे वैभवशाली भारत की ऐसी स्थिति क्यों हो गई कि हर किसी ने आकर यहां पहले लूट मचाई, फिर यहां शासन किया। आखिर वे कौन से कारण थे जिनके कारण हम गुलाम, अशिक्षित, गरीब, अज्ञानी और बेबस हो गए। इस अध्याय में हम उन कारणों को जानने का प्रयत्न करेंगे।

कहते हैं "एक तेज उड़ते हुए जहाज को एक छोटा पक्षी भी बाधा पहुंचाने की क्षमता रखता है।"

आर्यावर्त के अपने शीर्ष समय में ज्ञान-विज्ञान का उच्चतम आदर्श इतनी तीव्र गति से चल रहा था कि छोटी-छोटी कमियां/बुराइयां/चूकें ही इसके विनाश का कारण बन गई। जिस वर्ग का कार्य राज्य को सही मार्ग पर चलाते रहने का है, अगर वही चूक करे तो विनाश निश्चित ही है।

– क्रमश:

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

31 मार्च, 2025
से
06 अप्रैल, 2025

दिल्ली में हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है 150वां आर्यसमाज स्थापना वर्ष - चैत्र शुक्ल प्रतिपदा एवं नवर्ष

सुन्दर लाइटिंग, साज-सज्जा और शुभकामना सन्देशों के होर्डिंस से जगमगाए आर्य समाज मन्दिर

यज्ञ एवं सत्संगों के विशेष आयोजन, प्रसाद वितरण के कार्यक्रमों में उमंग, उत्साह और उल्लासपूर्वक आर्यजनों ने एक-दूसरे को दी 150वें आर्यसमाज स्थापना दिवस, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तथा नववर्ष की बधाई और शुभकामनाएं

महर्षि दयानंद सरस्वती की अमर वाटिका आर्य समाज एक विश्व व्यापी संगठन है। यूं तो हर वर्ष आर्य समाज का स्थापना दिवस और नववर्ष समस्त आर्य समाजों द्वारा पूरे विधि विधान के साथ उत्साह पूर्वक मनाने की हमारी परंपरा प्राचीन है। किन्तु इस वर्ष आर्य समाज का 150 वां स्थापना वर्ष दिल्ली की समस्त आर्य समाजों द्वारा अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास पूर्वक मनाया गया। वैसे तो इस अवसर पर 29, 30 मार्च 2025 को दो दिवसीय ऐतिहासिक आयोजन मुंबई की धरा पर जहां महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने 1875 में प्रथम आर्य समाज की स्थापना की थी, वहां सारे देश के कोने-कोने से सभी प्रांतीय सभाओं के अधिकारी और विदेशों से आर्यजन पधारे वहां एक भव्य विशाल और विराट आयोजन अपनी अपार सफलताओं के साथ संपन्न हुआ। इसके साथ ही पूरे भारत और विदेशों में स्थित आर्य समाजों ने अपने अपने स्तर पर स्थापना दिवस और नववर्ष के प्रेरक आयोजन किए। लेकिन दिल्ली की आर्य समाजें सुंदर लाइटिंग से जगमगाती हुई दृष्टिगत हुई, इसके साथ ही विशेष सत्संगों का आयोजन, भवनो की दीवारों पर बधाई देते हुए होडिंग बोर्ड और इस विशेष अवसर पर प्रसाद वितरण करते हुए आर्यजन तथा एक दूसरे को स्थापना दिवस के साथ ही नववर्ष की बधाई देते हुए हर आयु वर्ग के लोग अपने आप में यह दर्शा रहे थे कि हम सबके लिए आज यह विशेष उपलब्धियों का पर्व है। आर्य संदेश के इस अंक में प्रस्तुत है दिल्ली की आर्य समाजों की कुछ प्रेरक सचित्र झलकियां।

150वें आर्यसमाज स्थापना दिवस-चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अवसर पर सुसज्जित आर्यसमाज के भवन - आर्यसमाज हनुमान रोड, गोविन्द पुरी एवं आर्यसमाज रानी बाग

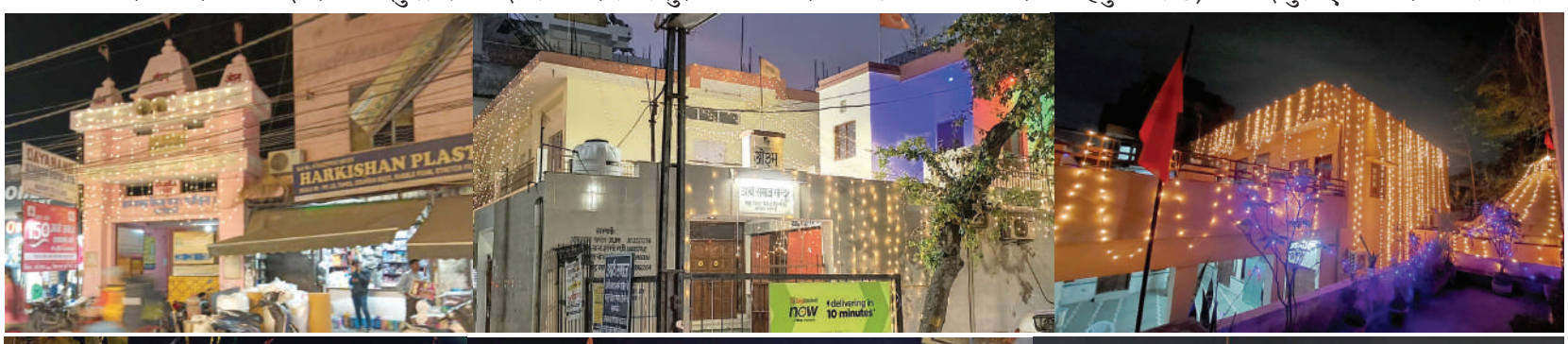

आर्यसमाज तिलक नगर, मयूर विहार-2, संन्दर विहार, विकास पुरी डी ब्लाक, ग्रेटर कैलाश पार्ट-1 एवं अमर कालोनी-लाजपत नगर

आर्यसमाज करोल बाग, सैनिक विहार, दिलशाद गार्डन, गोविन्दपुरी, डोरीवालान, सुन्दर विहार में रंगोली एवं प्रसाद वितरण तथा शुभकामनाएं देते होर्डिंग्स

150वें स्थापना वर्ष के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में भारत के दक्षिणतम भूभाग

अंडमान निकोबार द्वीप में प्रथम बार आयोजित पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य का प्रचार

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं को तथा आर्य समाज के सिद्धांत, मान्यता और परंपराओं को जन-जन तक पहुंचाने हेतु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सदैव प्रयासरत है। इस क्रम में पूरे भारत के कोने-कोने में आयोजित होने वाले विश्व पुस्तक मेलों, प्रान्तीय पुस्तक मेलों में सभा द्वारा पिछले लंबे समय से वैदिक साहित्य के स्टाल लगाए जाते हैं। अभी हाल ही के दिनों में अंडमान निकोबार द्वीप समूह में पुस्तक मेले का आयोजन किया गया। वहां पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश सहित वैदिक विद्वानों द्वारा निर्मित साहित्य का एक बृहद स्टॉल लगाया गया है, जहां पर क्षेत्रीय जन और स्कूलों के बच्चे उपस्थित होकर पुस्तक खरीद रहे हैं। इस अवसर पर अंडमान-निकोबार के महामहिम उपराज्यपाल श्री डी.के. जोशी भी सभा के स्टाल पर पधारे। महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा रचित अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी वहां के लोगों अत्यंत प्रभावित और आकर्षित कर रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार एवं आर्य प्रकाशन के सहयोग से सभा द्वारा पटना पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य का प्रचार

किसी भी संस्था का प्राण उसके साहित्य में निहित होता है। आर्य समाज का साहित्य ईश्वर की अमृतवाणी वेद पर आधारित है। इसका प्रचार-प्रसार ईश्वर की नियम, व्यवस्था और आज्ञाओं के प्रसार का कार्य है। अभी पिछले दिनों आर्य प्रकाशन, दिल्ली सभा द्वारा बिहार सभा के सहयोग से से पटना पुस्तक मेले में वैदिक साहित्य का स्टॉल लगाया गया, जिसमें क्षेत्रीय हर आयु वर्ग के लोगों ने सहभागिकता की और आर्य समाज के साहित्य को अत्यधिक पसंद किया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के संरक्षक एवं पूर्व राज्यपाल बाबू गंगा प्रसाद जी एवं उनके सुपुत्र श्री संजीव चौरसिया जी विधायक इत्यादि वरिष्ठ और विशिष्ट महानुभावों ने स्टॉल पर पधारकर पुस्तक खरीदी और महर्षि दयानंद और आर्य समाज के साहित्य के प्रचार-प्रसार करने हेतु आर्य प्रकाशन के श्री संजीव कोहली जी को बधाई और शुभकामनाएं भी प्रदान की।

150वें स्थापना वर्ष के कुछ अति विशेष प्रकाशन

आइए, सहभागी और सहयोगी बनें

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

इस विषय में सभी आर्यजन अपने या अपने परिवार के पहले पहल आर्यसमाजी बनने की रोचक घटना और कारण को लिखकर अवश्य भेजें। सर्वश्रेष्ठ 150 घटनाओं की ऐतिहासिक पुस्तक का प्रकाशन किया जाएगा। रचना अधिकतम 500 शब्दों में ही लिखकर भेजें।

आर्य समाजी जेलों में

इस पुस्तक में उन सभी नामों का संकलन करने का विचार है, जो आजादी के आन्दोलन में, हैदराबाद सत्याग्रह में, हिन्दी सत्याग्रह में, गौरक्षा आन्दोलन में, सिन्ध सत्यार्थ प्रकाश सत्याग्रह, पटियाला केस आदि में समर्पित महानुभाव - जिनको किसी भी सज्जन का नाम पता लगे-किस जेल में गए थे- किस कारण से गए थे तो शीघ्र ही अवश्य लिखकर भेजें।

आर्य समाज Today

वर्तमान आर्य समाज की संस्थाओं की सटीक जानकारी एक स्थान पर एकत्र करने हेतु। इस विशेष प्रकाशन को किया जा रहा है, इससे पूर्व आर्य संस्थाओं से जुड़ी जानकारियों का प्रकाशन शताब्दी समारोह के समय किया गया था। समस्त आर्य समाजें अपने समाज की गतिविधियों सहित विशेष जानकारियां अवश्य भेजें।

संस्मरण एवं श्रद्धांजलि

अपने आत्मीय महानुभावों का स्मरण, अपने पूज्य माता-पिता/गुरु/आचार्य जिन्होंने आपके जीवन में आर्यसमाज का प्रकाश करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनको श्रद्धांजलि देते हुए परिचय फोटो सहित। ये प्रकाशन सहयोग राशि के साथ होगा। इसका एक भाग लगभग - 400 पृष्ठ का होगा।

एक पृष्ठ पर एक परिचय 5000/- रूपये की अल्प राशि से प्रकाशित होगा - दो प्रतियां नि:शुल्क दी जाएंगी।

ज्ञान ज्योति पर्व आयोजन स्मारिका

200वीं जयन्ती और 150वें स्थापना दिवस के देश-विदेश में हुए विशेष आयोजनों की संक्षिप्त रिपोर्ट, फोटोग्राफ्स, प्रमुख व्यक्तियों के भाषण, विशेष घटनाएं आदि का संग्रह, प्रकाशन करना इस प्रकाशन का उददेश्य रहेगा।

आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस पर आर्य सन्देश विशेषांक हेतु ऐतिहासिक लेख एवं घटनाक्रमों पर आधारित प्रेरक प्रसंग अवश्य भेजें

उपरोक्त ऐतिहासिक प्रकाशनों से जुड़ी जानकारी, लेख एवं अन्य सामग्री डाक/ईमेल अथवा व्हाट्सएप्प पर शीघ्र-अतिशीघ्र भेजें-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) 15 - हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Email : aryasabha@yahoo.com; 9540097878

200वीं जयन्ती की डाक टिकट

अधिकाधिक खरीदकर प्रयोग करें

समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य संगठनों, विद्यालयों, गुरुकुलों, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं से निवेदन है कि यह डाक टिकट स्मृति रूप में अपने पास रखने तथा जन साधारण में प्रचार-प्रचार के लिए अधिकाधिक संख्या में खरीदकर प्रचार करें, अपने दैनिक पत्र-व्यवहार, स्पीड पोस्ट, रजिस्टर्ड डाक आदि में प्रत्येक स्थान पर उपयोग करें, जिससे कि हजारों-लाखों आखों और हाथों से होते हुए यह प्रचारित हो और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्म वर्ष की स्मृति रूप में सुरक्षित रहे। आप अपनी संस्था के लिए जितनी डाक टिकटें प्राप्त करना चाहते हैं, कृपया उसकी संख्या के अनुसार अपनी सहयोग राशि 5/- प्रति डाक टिकट की दर से निम्नांकित बैंक खाते में नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम जमा करें अथवा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेजें।

Delhi Arya Pratinidhi Sabha A/c No. : 2009257009039

IFSC :CNRB0002009 Canara bank New Delhi Branch

साप्ताहिक स्वाध्याय

राजपूताना में कार्य

गतांक से आगे–

यहां उन दिनों पण्डित विष्णुलाल मोहनलाल जी पण्ड्या राज्य के कार्यकर्ताओं में थे। पण्डित जी भी महर्षि के भक्त थे। वह प्राय: महर्षि जी से ज्ञान चर्चा किया करते थे। एक दिन निम्नलिखित आशय की बातचीत हुई–

पण्ड्या जी ने पूछा– 'भगवन! भारत का पूर्ण हित कब होगा? यहां जातीय उन्नति कब होगी?'

महर्षि जी ने उत्तर दिया–'एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाए बिना भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर कार्य है। सब उन्नतियों का केन्द्र स्थान ऐक्य है। जहां भाषा, भाव और भावना में एकता आ जाय, वहां सागर में नदियों की भांति सारे सुख एक–एक करके प्रवेश करने लग जाते हैं। मैं चाहता हूं कि देश के राजे–महाराजे अपने शासन में सुधार और संशोधन करें। अपने राज्य में धर्म, भाषा और भावों में एकता उत्पन्न कर दें, फिर भारत–भर में आप ही आप सुधार हो जाएगा।' (श्रीमद्दयानन्दप्रकाश)

महर्षि ने एक दिन कविराज श्यामलदास जी से कहा कि 'मेरे मरने के पश्चात् मेरी अस्थियों को खेत में डाल देना, कोई समाधिया कोई चिन्ह कभी न बनाना!'

कविराज ने कहा– 'महाराज! मैंने सोच रखा था कि अपनी एक पत्थर की मूर्ति बनवाऊं और उसे किसी जगह रख दूं ताकि मेरे बाद वह मेरा स्मारक समझा जावे।'

महर्षि जी ने तुरन्त कहा– 'देखे कविराज जी ऐसा भूलकर भी मत करना! बस, यही तो मूर्ति पूजा की जड़ हुआ करती है।'

महर्षि के ये वाक्य स्मरणीय हैं। महर्षि मूर्ति–पूजा को हानिकारक समझते थे। वह जानते थे कि लोग असली आशय को भुलाकर स्थूल रूप में उलझ जाते हैं। महर्षि जीवित जागृति स्मारकों को मानते थे, जड़ या मुर्दा स्मारकों को नहीं। महर्षि अपना स्मारक आर्यसमाज को, वेदभाष्य को और परोपकारिणी सभा को मानते थे, किसी शिला या मकान को नहीं। जड़ स्मारक महर्षि जी के आशय के प्रतिकूल था।

एक दिन महाराणा सज्जनसिंह अकेले में महर्षि दयानन्द से बोले कि 'महाराज! यदि आप देश–कालोचित समझकर मूर्तिपूजा का खण्डन करना छोड़ दें तो अति उत्तम हो, क्योंकि आप जानते हैं कि यह रियासत एकलिंगेश्वर महोदय के अधीन चली आती है। यदि आप स्वीकार करें तो इस मन्दिर के महन्त बन सकते हैं। वैसे तो यह राजा भी उसी मन्दिर के समर्पित है, परन्तु मन्दिर के नाम जो राज्य का भाग लगा हुआ है, उसकी भी लाखों की आय है उस पर आपका अधिकार हो जाएगा।'

महर्षि को क्रोध नहीं आता था, परन्तु अपने शिष्य की इस बात से वह झुंझला उठे। महर्षि ने उत्तर दिया– 'महाराणा जी आप मुझे लालच देकर उस सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर की अवज्ञा करने पर उद्यत करना चाहते हैं ये आपके मन्दिर और यह आपकी छोटी–सी रियासत (जिससे मैं एक दौड़ में बाहर जा सकता हूं) मुझे किसी दशा में उस परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध नहीं कर सकते, जिसके राज्य से कोई कभी किसी प्रकार भी नहीं जा सकता। आप निश्चय रखें कि मैं परमात्मा

और वेदों की आज्ञा के विरुद्ध कोई काम नहीं कर सकता।'

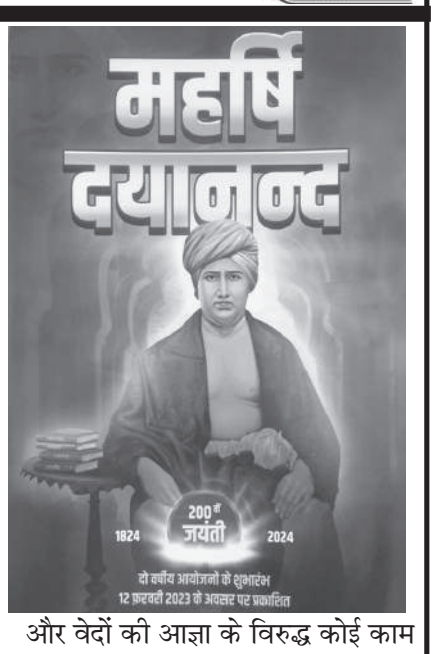

यह उत्तर सुनकर महाराणा लज्जित हुए और क्षमा मांगने लगे।

–क्रमश:

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी 'महर्षि दयानन्द' से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन www.vedicprakashan.com अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Works in Rajputana

Pandit ji was also in awe of the sage. He often used to discuss knowledge with Swamiji. One day there was a conversation with the following intention-

Panddha ji asked - ' God! When will it be in India's full interest? When will there be ethnic progress here?

Swami ji replied- 'It is a difficult task to have complete interest and ethnic progress of India without making one religion, one language and one goal. The central place of all progress is unity. Where there is unity in language, emotion and feeling, there all the threads start entering one by one like rivers in the ocean. I want the kings and emperors of the country to reform and amend their governance. Create unity in religion, language and feelings in your state, then the whole of India will automatically improve." (Shrimaddayanand Prakash)

One day the sage said to Kaviraj Shyamldas ji that after my death, put my bones in the sand, never make any tomb or any symbol!

Kaviraj said - ' Maharaj! I was thinking of making a stone statue of myself and placing it somewhere so that it would be considered as my memorial after me.

Swami ji immediately said - O Kaviraj ji, don't do this even by mistake! That's all, this is the root of idol worship.

These sentences of the sage are memorable. The sages considered idol-worship to be harmful. He knew that people forget the real meaning and get entangled in the gross form. The sages believed in living awakened monuments, not inert or dead monuments. Rishi used to consider Aryasamaj, Vedbhashya and Paropakarini Sabha as his memorial, not any rock or house. The root memorial was contrary to Swamiji's intention.

One day Maharana Sajjan Singh said in private to Rishi Dayanand that 'Maharaj! If you stop condemning idol-worship considering it anti-national, then it would be very good, because you know that this princely state comes under Eklingeshwar sir. If you accept then you can become the Mahant of this temple. By the way, this king is also dedicated to the same temple, but the part of the state which is named after the temple, it also has an income of lakhs, you will have the right over it.

The sage did not get angry, but he got annoyed by this talk of his disciple. The sage replied- ' Maharana ji, you want to entice me to disobey that omnipotent Jagdishwar, this is your temple and this small state of yours (from which I can go out in a race) Can't do against the command, from whose kingdom no one can ever go in any way. You must be sure that I cannot do anything against the orders of God and the Vedas.

Maharana was ashamed after hearing this answer and started apologizing.

To be Continue............

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर
दस लाख रुपये की पुरस्कार प्रतियोगिता
कॉमिक्स पढ़ें और जीतें लाखों के ईनाम

1 पुरस्कार : 1 लाख, 2 पुरस्कार : 51 हजार, 3 पुरस्कार : 31 हजार,
4 पुरस्कार : 51 सौ, पुरस्कार : 2100 नकद, छठा पुरस्कार : 1000 नकद,
सातवां पुरस्कार : 500/- रुपये नकद

प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार विजेता के विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

सर्वाधिक प्रतियोगिता सहभागी वाले विद्यालय/संस्था को विशेष पुरस्कार

पृष्ठ 2 का शेष

150 वर्षों से मानवता को पोषित....

विश्वास रखो और जैन बनो, सिख बनो, देवी देवताओं पर विश्वास रखो और मोक्ष पाओ, कुंभ में स्नान करो और मोक्ष प्राप्त करो आदि-लेकिन परमपिता परमात्मा जो संसार के कण-कण में व्यापक है, जिसके चलाने से हवाएं गतिमान है, निर्झर झरते हैं, प्रवाह बहते हैं, जो फूलों में मुस्कुराता है, पक्षियों के मधुर कंठो में आवाज बनकर गूंजता है, जो चीटी से लेकर हाथी तक सबका जन्म दाता, पालक और संहारक है, जो प्राणीमात्र का कर्मफल प्रदाता है, सारे संसार को गति देता है लेकिन स्वयं गति में नहीं आता, उस परमात्मा के प्रति विश्वास रखने की कोई बात कोई नहीं करता, अगर कोई करता है तो वह केवल और केवल आर्य समाज है। आर्य समाज हमेशा निराकार परमपिता परमात्मा की भक्ति अर्थात उसकी आज्ञापालन करने की बात करता है, उसकी उपासना करने का संदेश देता है।

आज मनुष्य चांद पर, मंगल पर जाना तो सीख गया है लेकिन उसको धरती पर सही से रहने की विधि अभी तक नहीं आई है, इसलिए व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और दुनियां में हर स्तर पर मारा-मारी है, भागम भाग है, चारों ओर दु:ख, पीड़ा और संताप, कष्ट क्लेश व्याप्त हैं, इसके अनेक कारण हो सकते हैं लेकिन सबसे बड़ा कारण यही है कि आज का मनुष्य, मनुष्य नहीं बन पा रहा, मानवता के मर्म को नहीं समझ पा रहा, अपने जीवन के लक्ष्य और उद्देश्य को समझने में लगातार नाकाम हो रहा है, दिखावट, बनावट और सजावट में ही निमग्न हो रहा, शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक स्तर पर उन्नति करने की बजाय लगातार पतन की ओर जा रहा है, जब तक आर्य समाज के सार्वभौमिक विकास के सिद्धांत, मान्यता एवं परंपराओं को जो कि वेदों पर आधारित है, उसको मनुष्य आत्मसात नहीं करेगा तब तक भौतिक उन्नति चाहे कितने भी हो जाए किंतु आध्यात्मिक उन्नति से वंचित ही रहना पड़ेगा। आर्य समाज राष्ट्र को सर्वोपरि मानता है, शिक्षा और संस्कारों की बात करता है, धर्म और संस्कृति को अपनाने का आह्वान करता है, सामाजिक कुरीतियों, ढोंग, पाखंड और अंधविश्वास को समाज से मिटाने की बात करता है, जातिवाद छुआछूत का विरोध करता है, सबको एक परमपिता की संतान मानता है, स्व. कर्तव्य परायणता को ही मानव धर्म मानता है, भगवान को ही सबसे बड़ा और सबसे सगा गुरु मानता है, यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना और समर्पण आदि को ही अध्यात्म के सोपान मानता है, और यही मानवता के वे आधार स्तंभ हैं जो मानव को मानवता का अनुगामी बनाते हैं, ईश्वर की अमृतवाणी वेद के अनुसार कल्याण का सुपथ दिखाते हैं।

आर्य समाज पिछले 150 वर्षों से मानव समाज को मानवता का पाठ पढ़ाता आ रहा है, महर्षि दयानंद सरस्वती जी के पावन उद्घोष "वेदों की ओर लोटो" की याद दिला रहा है, भारत के कोने-कोने में और लगभग विश्व के हर देश में वेद का यही संदेश गुंजायमान कर रहा है कि हे मनुष्य, तू मनुष्य बन, हे मानव, तू मानवता का रक्षक बन, ईश्वर की अमृत संतान है तू उसके बताए वेदमार्ग का अनुसरण करें।

-संपादक

पृष्ठ 3 का शेष

आर्य समाज काकड़वाड़ी बम्बई का मन्दिर .....

युग इसी समाज का स्वर्णयुग था। उस समय सेठ श्री शूरजी बल्लभदास, श्री रणछोड भवन लोटवाला, सेठ शीवदास चांपसी ठक्कर तथा ऐसे ही अनेक श्रेष्ठ इसी समाज के कर्णधार थे। पश्चिम भारत में काकड़वाड़ी आर्य समाज जिसकी स्थापना महर्षि ने स्वयं सन 1875 में की थी आज आर्य जगत के गौरव का स्थान है। इस स्थान से वर्षों तक आर्य समाज की प्रवृति होती रही। जब-जब हिन्दू-मुस्लिम दंगे होते थे अथवा इसी प्रदेश में कोई प्राकृतिक कष्ट आते थे उस समय इस आर्य समाज के कर्णधार हिन्दू रक्षा का कार्य करते। बाढ़ एवं दु:ख काल पीड़ितों की सहायता के केन्द्र खोल काम करते। रूढ़ीवाद की श्रृंखलाओं को तोड़कर विवाह आदि करने वालों का भी यही समाज आश्रय स्थान था।

आर्य समाज के गौरवपूर्ण कार्यो के केन्द्र में काकड़वाड़ी आर्य समाज मंदिर रहा, समाज में अनाथ तथा दु:खी बालाओं की रक्षा हेतु यहां आर्य समाज के अंतर्गत आश्रम भी चलता रहा और अनेक कन्याओं का रक्षण विधर्मियों की इन्द्रजाल से किया गया, अब यह आश्रम बड़ौदा स्थानांतरित किया गया है और वहां बड़ौदा आर्य कुमार सभा के तत्वावधान में चल रहा है।

इसी प्रकार वैदिक विधि से विवाह करने वालों के लिये काकड़वाड़ी का समाज मंदिर एक महत्त्वपूर्ण स्थान है जहां समाज सुधारक जनता बड़े चाव से आर्य सामज की छत्रछाया में वैदिक विधि से विवाह संस्कार कराती है।

आज महर्षि के करकमलों द्वारा स्थापित अपने जीवन काल के इतने महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं, जो स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगे। समय-समय पर इसके अनेक कर्णधार जिन्होंने इस समाज को गौरव प्रदान किया उनके भी नाम इतिहास में अमर रहेंगे।

आज जिस समय हम आर्य सामज की शताब्दी मनाने जा रहे हैं उस समय काकड़वाड़ी आर्य समाज मंदिर जिसकी स्थापना महर्षि के करकमलो से हुई वह दर्शनीय एवं गौरव का स्थान है। वर्तमान अधिकारियों ने शताब्दी समाराहे के उपलक्ष्य में इस समाज को सुंदर रूप देने का प्रयत्न किया है और इसके पास कुछ सरकारी भूमि लेने की चेष्टा हो रही है। समाज का एक मकान भाड़े पर भी चल रहा है जिससे समाज को कुछ आय हो जाती है। आर्य समाज के लिये काकड़वाड़ी आर्य सामज मंदिर एक तीर्थ स्थान के रूप में रहेगा और यहां से आगामी वर्षो में वैदिक धर्म प्रचार की प्रवृति व्यापक रूप से होती रहे ऐसा आयोजन हो रहा है।

- : साभार :-

आर्यसमाज काकड़वाड़ी बम्बई-4

स्मृति ग्रन्थ - स्थापना शताब्दी से साभार

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे
प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

"महर्षि दयानन्द को आपरेटिव अर्बन थ्रिफ्ट एंड क्रेडिट सोसाइटी लि."

सदस्यता आरम्भ का सुनहरा अवसर

सभी सम्मानित सदस्यों को जानकर हर्ष होगा की आपकी सोसाइटी प्रगति की ओर बढ़ रही है। गत कार्यकारिणी बैठक में निर्णय लिया गया है कि हम आपके परिवार के सदस्यों और परिचित व्यक्तियों को भी सदस्य बनाने जा रहे हैं। इस अवसर को "पहले आओ - पहले पाओ" के आधार पर सीमित 100 सदस्यता के लक्ष्य के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है।

सदस्यता के लिए आवश्यक दस्तावेज और औपचारिकताएं निम्नलिखित हैं।

- सदस्यता फॉर्म
- आधार कार्ड / पैन कार्ड
- कंपल्सरी डिपाजिट (न्यूनतम 200 प्रति माह)
- 2 पासपोर्ट साइज फोटो
- न्यूनतम 4 शेयर (प्रति शेयर ₹500)
- एडमिशन फीस ₹100/-

सदस्यता ग्रहण करने के लिए निम्न नंबर पर संपर्क करे-
Phone No. : 011-44775498/ 9311413920
Email id : swamidayanandsociety@gmail.com

आर्यसमाज मन्दिर द्वारका नई दिल्ली के

भवन निर्माण हेतु सहयोग की अपील

अत्यंत हर्ष के साथ आपको सूचित कर रहे हैं कि परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य समाज मंदिर द्वारका, नई दिल्ली को डी.डी.ए. द्वारा द्वारका सैक्टर-17 में 400 वर्ग मीटर का प्लॉट मिल गया है। जिस पर आर्य समाज द्वारका के भव्य भवन निर्माण आरम्भ किया जाना है। बंधुओं, आर्य समाज द्वारका को आपके तथा आपकी संस्थान के सहयोग की अत्यंत आवश्यकता है। अत: आपसे अनुरोध है पवित्र कार्य को पूरा करने में आर्य समाज मंदिर द्वारका का सहयोग करें तथा अपने परिवार/मित्रों/रिश्तेदारों/ सोसायटी इत्यादि को भी आर्थिक सहयोग करने के लिए प्रेरित करें। आप अपना सहयोग सीधे निम्नांकित बैंक खाते में/अथवा स्कैन कोड के माध्यम से प्रदान कर सकते हैं-

ARYA SAMAJ TEMPLE SOCIETY SECTOR 11
A/C No. 4447000100113452 IFSC: PUNB0444700
PUNJAB NATIONAL BANK, SEC -10 DWARKA, DELHI

-: निवेदक:-

आर्य समाज मंदिर द्वारका, 9811888707, 9560631667, 9899444347

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

सोमवार 31 मार्च, 2025 से रविवार 06 अप्रैल, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 03-04-05/04/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 02 अप्रैल, 2025

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती
150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष
के ऐतिहासिक अवसर पर

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

150वां आर्यसमाज स्थापना वर्ष विशेषांक का प्रकाशन

समस्त आर्यजनों, आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं एवं सम्मापित पाठकों को जानकर हर्ष होगा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के अवसर पर साप्ताहिक आर्य सन्देश के विशेषांक **"150वां आर्य समाज स्थापना वर्ष"** का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसमें महर्षिकृत सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रंथ, महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व, सेवा कार्य, उनके जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंग, आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास, आर्य समाज द्वारा किए गए विभिन्न सफल आंदोलन, यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा, साधना और समर्पण आदि विषयों पर शोधपरक लेख, कविताएं, रचनाएं, प्रेरक प्रसंग एवं संस्मरण आदि प्रकाशित किए जाएंगे।

अत: समस्त वैदिक विद्वानों, लेखकों, भजनोपदेशकों एवं कवि महानुभावों से निवेदन है कि उपरोक्त विषयों पर अपने मौलिक एवं अप्रकाशित लेख एवं रचनाएं प्रकाशनार्थ भेजने की कृपा करें। इसके साथ ही समस्त प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों, विद्यालयों, गुरुरुकुलों, शिक्षण संस्थाओं, आर्य प्रतिष्ठानों और उद्योगपति परिवारों से सहयोग रूप में विज्ञापन भी सादर आमन्त्रित किए जाते हैं।

विशेषांक का आकार 23x36x8 (A4 Size) होगा एवं विज्ञापन दर निम्न प्रकार हैं -

विज्ञापन का आकार	विज्ञापन दर (रंगीन)	विज्ञापन दर (श्याम-श्वेत)
पूरा पृष्ठ	10000/- रुपये	7500/- रुपये
आधा पृष्ठ	5000/- रुपये	4000/- रुपये

इसके साथ ही **कवर पृष्ठ विज्ञापन - अन्तिम पृष्ठ हेतु 51000/-** रुपये एवं **कवर पृष्ठ 2 एवं 3 हेतु 31000/- रुपये** की की सहयोग राशि निर्धारित की गई है।

कृपया अपना विज्ञापन सहयोग एवं प्रकाशनार्थ सामग्री **'आर्य सन्देश साप्ताहिक'** के नाम **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें या **aryasandeshdelhi@gmail.com** पर ईमेल करें। - ***सम्पादक***

प्रतिष्ठा में,

आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों की उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृति योजना

आर्य प्रगति छात्रवृत्ति परीक्षा 2025

- पात्रता: आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि तक बारहवीं कक्षा या समकक्ष कक्षा में उत्तीर्ण होना।
- आयु सीमा: आवदेन की अंतिम तिथि तक 16 से 25 वर्ष ।
- छात्रवृत्ति हेतु अभ्यर्थियों की लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर चयन किया जाएगा।
- परीक्षा ऑनलाइन बहुकल्पिक प्रश्नों के माध्यम से ली जाएगी।
- पात्रता परीक्षा का विषय सामान्य ज्ञान, गणित और साधारण विज्ञान पर आधारित होगा।

आवेदन आरंभ की तिथि : 01-04-2025

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172
E-mail: dss.pratibha@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह